International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 27-10-2020; Accepted: 12-11-2020; Published: 29-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 100-101

राहुल सांकृत्यायन की ऐतिहासिक कहानियाँ

डॉ. संजय कुमार
ललित नरायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
पंडित राहुल सांकृत्यायन मूल रूप से इतिहास जिज्ञाशु थे वे कहानी विधा को भी साधन के रूप में उपयोग किया है उनकी 'कनैला की कथा' और 'वोल्गा से गंगा' दोनों कहानी संग्रह इतिहास जिग्याशुओं की पिपासा शांत करने में समर्थ है। प्रस्तुत शोध – निबंध में राहुल सांकृत्यायन की ऐतिहासिक कहानियों पर प्रकाश डाला गया है।

मूल शब्द: राहुल सांकृत्यायन, कनैला की कथा, वोल्गा से गंगा

प्रस्तावना
इस वर्ग में 'वोल्गा से गंगा' और 'कनैला की कथा' कहानियों का उल्लेख किया जाता है। इनमें ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिवेश दृष्टिगत होता है। इस क्रम में लेखक के इस मंतव्य को उद्घृत किया जाता है–

''लेखक की एक–एक कहानी के पीछे उस युग के संबंध की वह भारी सामग्री है, जो दुनिया की कितनी ही भाषाओं, तुलनात्मक भाषा–विज्ञान, मिट्टी, पत्थर, ताँबे, पीतल, लोहे पर सांकेतिक एवं लिखित साहित्य अथवा अलिखित गीतों, कहानियों, रीति–रिवाजों, टोटके दोनों में पाई जाती है।''[1]

राहुल ने इतिहास की विस्मृत घटनाओं को लेकर अपने कथा साहित्य की पृष्ठभूमि का निर्माण किया है।

'वोल्गा से गंगा' में कहानीकार ने वोल्गा नदी से गंगा नदी के तट की मानवीय सभ्यता और संस्कृति 8000 वर्षों के क्रमिक वैशिष्टय प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। प्रस्तुत संग्रह की बीस कथाओं को ऐतिहासिक युग के अनुरूप इन कालखण्डों में विभक्त किया जा सकता है–

1. प्रागैतिहासिक युग
2. ऐतिहासिक युग और
3. आधुनिक युग

प्रागैतिहासिक युग में प्रस्तुत संग्रह की आठ कहानियों को उदघृत किया जा सकता है। इनमें प्रथम चार कथाएँ हैं–निशा, दिवा, अमृताश्व व पुरूहूत। ये ई0 पू0 6000 से 2500 ई0 तक प्राचीन समाज के परिप्रेक्ष्य में रचित हैं। इन कथाओं के पृष्ठभूमि में कल्पना से युक्त राहुलजी का यूरोपीय एवं भारत ईरानी भाषा शास्त्र विषयक अध्ययन की प्रस्तुति है।

राहुल जी वैदिक–साहित्य का भी अध्ययन किया है। फलतः पात्रों के नाम और संवाद आदि पर प्रभाव परिलक्षित होता है। ऋग्वेद में देवताओं के द्वारा अग्नि की प्रमुखता सिद्ध की गई है। यास्क ने 'अग्नि को सर्वा देवता' के रूप में उसकी प्रतिष्ठा का प्रतिपादन किया है। ऋग्वेद का प्रारंभ ही अग्नि के स्वरूप निरूप से होता है। 'वोल्गा से गंगा' की प्रथम कहानी में 'अग्नि' बालक को इसी महत्ता के प्रतीक के रूप में संबोधित किया गया है। कहीं–कहीं तो वाक्यवली में वैदिक मंत्रो का अनुवाद–सा मिलता है। जैसे–''पी सोम और अमृत बन जा''[2] यह वाक्य वेद के मन्त्रांश का अनुवाद है।

इसी प्रकार पितरो के लोक में जाने की बात भी वैदिक है।

इसके बाद की 2000 ई0 पू0 तक की चार कहानियाँ–पुरूधान, सुदास, अंगिरा और प्रवाहण की आधारशिला वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, पुराण और बौद्धकथा आदि में मिलती है। इसी प्रकार गार्गी, विश्वामित्र, वशिष्ठ, भारद्वाज आदि पात्र वैदिक काल के हैं। ऐतिहासिक युग की कहानियों में बन्धुलमल्ल की कथा 430ई0 पू0 के बौद्धग्रन्थों में मिलती है। इससे संबंधित अतुल सामग्री के सदुपयोग हेतु लेखक को 'सिंहसेनापति' उपन्यास की रचना करनी पड़ी। प्रसेनजित्, बंधुलमल्ल, मल्लिका, विडुडम, दीर्घकारायण आदि पात्र एवं घटना–चक्र के सूत्र बौद्ध ग्रन्थों में प्राप्त है। नागदत्त शीर्षक कथा (335 ई0 पू0) कौटिल्य के अर्थशास्त्र यवन के यात्रियों के वृतान्त, जायसवाल जी की हिन्दू पालिटी एवं विसेन्ट के इतिहास के पृष्ठाधार को ग्रहण कर रचित है।

'प्रभा' (50 ई0 पू0) कहानी अश्वघोषक के बुद्धचरित, सौन्दनानन्द विन्यर्निटज का 'भारतीय साहित्य का इतिहास' और रीजजेविडस के बौद्धभारत की भावभूमि पर आधारित है। इसमें पुरूरवा उर्वशी के प्रणय–व्यापार का वर्णन वैदिक आख्यान पर ही आधारित है।

'सुपर्णयौधेय' (420 ई0) कथा की सामग्री गुप्तकालीन अभिलेखो, रघुवंश, कुमार सम्भवम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, पाणिनि एवं चीनी–यात्री फाहियान के यात्रा–वृतान्त पर आधृत प्रतीत होती है। 'दुर्मुख' (630 ई0) कथा के आधार के रूप में वाण के हर्षचरित, कादम्बरी ग्रन्थों और ह्वेनसांग और इत्सिंग के यात्रा–वृत्त को प्रस्तुत किया जा सकता है।

'चक्रपणि' (1200 ई0) कथा नैषधचति, खंडन खंडखादय नानाशिलालेखों एवं अभिलेखों का परिणाम स्वरूप रचित है। 'बाबानूरदीन' (1300 ई0) की कथा खिजली वंश के बादशाह अलाउद्दीन के शासनकाल से संबधित है।

'सुरैया' (1600 ई0) की कहानी अकबर के उन्मुक्त धार्मिक एवम् राजनीतिक विचारों के परिणाम स्वरूप है। यह हिन्दुओं और मुसलमानों में पारस्परिक सद्भाव और अर्न्तजातीय विवाह के आदर्श को लेकर रचित कथा है।

आधुनिक युग की कहानियों में 'रेखाभगत' 'मंगलसिंह' आदि कथाएँ प्रमुख हैं। इनमें 1857 ई0 के गदर की आसपास की भारतीय परिस्थितियों, अंग्रजो के अत्याचारों, उनके दमन–चक्र, भारतीय क्रान्तिकारियों के ज्वलन्त कार्यों आदि के वर्णन मिलते है। 'सफदर' (1922 ई0) और सुमेर (1942) में दोनो कथाएँ लेखक के युग के यथार्थ को लेकर विरचित है।

उपर्युक्त चार कथाओं (रेखाभगत, मंगलसिंह, सफदर और सुमेर) में आग्लकालीन शासन की राजनीतिक, सामाजिक एवम् ऐतिहासिक परिस्थितियों का सूक्ष्म चित्रण दृष्टिगत होता है।

स्थानों के परिचय में कहानीकार की वैज्ञानिक–भौगोलिक दृष्टि का परिचय मिलता है। इस संग्रह की प्रथम पाँच कथाओं में रूसी प्रसिद्ध नदी वोल्गा एवं सुवास्तु नदी के मध्य स्थित प्रदेशो का वर्णन है। बाद की कथाओं में तक्षशिला एवम् पटना के मध्यवर्ती स्थलों का संकेत है। 'सुरैया' और 'नागदत' शीर्षक कथाओं सुरैया और कमल, नागदत्त और सोफिया की समुद्र–यात्रा युनान के आसपास चित्रित है। 'मंगलसिंह' में इंग्लैण्ड और 'सुमेर' में वर्मा–जापान आदि का उल्लेख द्रष्टव्य है। इनके अतिरिक्त अन्य कथाओं का केन्द्र स्थल भारत है।

'बोल्गा से गंगा' नामक कथा संग्रह कहानीकार ने सौन्दर्य की माँसलता के प्रति अपनी आस्था प्रकट की है। उदाहरण के लिए 'बन्धुलमल्ल' कहानी की ये पक्तियाँ प्रस्तुत हैं–

बन्धुल कंचुकी के भीतर से उठे क्षुद्र–विल्व स्पर्धी स्तनों का अधरोलिंगन करते हुए बोला–और ये तेरे स्तन?''[3]

श्बन्धुल ने कंचुकी को हटाकर शुभ्र स्फटिन–शिला सदृश वक्ष पर आसीन उन आरक्त गोल स्तनों को अँगोछे से बाँध दिया।''[4]

महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने अपने इन कहानियों के माध्यम से सामान्य हिन्दी पाठकों में ऐतिहासिकता का संचार करने की सफल कोषिष किया है यद्यपि उनकी कहानियों षिल्पकारिता की अभाव है तथापि इतिहास में रूचि रखने वालें व्यक्ति राहुल सांकृत्यायन की इन कहानियों से ऐतिहासिक दृष्टि बोध प्राप्त कर सकते हैं

संदर्भ

1. कहानी की संवेदनषीलता, सिद्धान्त और प्रयोग, डॉ0 भगवानदास वर्मा, पृ0 78
2. वोल्गा से गंगा (सुदास), पृ0 112–115
3. वोल्गा से गंगा – राहुल सांकृत्यायन पृ0 123
4. वोल्गा से गंगा – राहुल सांकृत्यायन पृ0 124